रजिस्टर्ड सं० डी—(डीएन)—73

REGISTERED NO. D—(DN)—73

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 7] नई दिल्ली, शनिवार, फरवरी 14, 1987 (माघ 25, 1908)

No. 7] NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 14, 1987 (MAGHA 25, 1908)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके।

(Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

विषय सूची

	पृष्ठ
भाग I—खण्ड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गयी विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं	169
भाग I—खण्ड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	159
भाग I—खण्ड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए संकल्पों और असांविधिक आदेशों के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	1
भाग I—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गयी सरकारी अधिकारियों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियां आदि के सम्बन्ध में अधिसूचनाएं	239
भाग II—खण्ड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	*
भाग II—खण्ड 1—क—अधिनियमों, अध्यादेशों और विनियमों का हिन्दी भाषा में प्राधिकृत पाठ	*
भाग II—खण्ड 2—विधेयक तथा विधेयकों पर प्रवर समितियों के बिल तथा रिपोर्ट	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियम (जिनमें सामान्य स्वरूप के आदेश और उपविधियां आदि भी शामिल हैं)	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सांविधिक आदेश और अधिसूचनाएं	*
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (iii)—भारत सरकार के मंत्रालयों (जिनमें रक्षा मंत्रालय भी शामिल है) और केन्द्रीय प्राधिकरणों (संघ शासित क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) द्वारा जारी किए गए सामान्य सांविधिक नियमों और सांविधिक आदेशों (जिनमें सामान्य स्वरूप की उपविधियां भी शामिल हैं) के हिन्दी में प्राधिकृत पाठ (ऐसे पाठों को छोड़कर जो भारत के राजपत्र के खण्ड 3 या खण्ड 4 में प्रकाशित होते हैं)	*
भाग II—खण्ड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी किए गए सांविधिक नियम और आदेश	*
भाग III—खण्ड 1—उच्च न्यायालयों, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, रेल विभाग और भारत सरकार के संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं	1295
भाग III—खण्ड 2—पेटेण्ट कार्यालय द्वारा जारी की गयी पेटेण्टों और डिजाइनों से संबंधित अधिसूचनाएं और नोटिस	113
भाग III—खण्ड 3—मुख्य आयुक्तों के प्राधिकार के अधीन अथवा द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं	--
भाग III—खण्ड 4—विविध अधिसूचनाएं जिनमें सांविधिक निकायों द्वारा जारी की गयी अधिसूचनाएं, आदेश विज्ञापन और नोटिस शामिल हैं	905
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी निकायों द्वारा विज्ञापन और नोटिस	21
भाग V—अंग्रेजी और हिन्दी दोनों में जन्म और मृत्यु के आंकड़ों को दिखाने वाला अनुपूरक	*

*पृष्ठ संख्या प्राप्त नहीं हुई।

CONTENTS

	PAGE
PART I—SECTION 1—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court ..	169
PART I—SECTION 2—Notifications regarding Appointments, Promotions, leave etc. of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	159
PART I—SECTION 3—Notifications relating to Resolutions and Non-Statutory Orders issued by the Ministry of Defence	1
PART I—SECTION 4—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc. of Government Officers issued by the Ministry of Defence	239
PART II—SECTION I—Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION I-A—Authoritative text in the Hindi Language of Acts, Ordinances and Regulations	*
PART II—SECTION 2—Bills and Reports of the Select Committee on Bills	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (i)—General Statutory Rules (including Orders, Bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India, (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories) .	*
PART II—SECTION 3—SUB-SEC. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administration of Union Territories)	*
ART II—SECTION 3—SUB-SEC. (iii)—Authoritative texts in Hindi (other than such texts published in Section 3 or Section 4 of the Gazette of India) of General Statutory Rules & Statutory Orders (including Bye-laws of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (including the Ministry of Defence) and by General Authorities (other than Administration of Union Territories)	*
PART II—SECTION 4—Statutory Rules and Orders issued by the Ministry of Defence	*
PART III—SECTION 1—Notifications issued by the High Courts, the Comptroller and Auditor General, Union Public Service Commission, the Indian Government Railways and by Attached and Subordinate Offices of the Government of India	1295
PART III—SECTION 2—Notifications and Notices issued by the Patent Office, relating to Patents and Designs	113
PART III—SECTION 3—Notification issued by or under the authority of Chief Commissioners	—
PART III—SECTION 4—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	905
PART IV—Advertisements and Notices issued by Private Individuals and Private Bodies	21
PART V—Supplement showing Statistics of Births and Deaths etc. both in English and Hindi .	*

* Folio Nos. not received.

भाग I—खण्ड 1
[PART I—SECTION 1]

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 5 फरवरी 1987

सं० 13-प्रे/87—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "सर्वोत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्रीमती इलाबेन नयनकुमार पटेल,
   बंगला नं 12, गंज विहार,
   नूतन पटीदार सोसायटी,
   जवाहर चौक, मणिनगर,
   अहमदाबाद।

4 फरवरी, 1984 को लगभग 6.00 बजे प्रातः साढ़े सात फुट लम्बा और ढाई फुट ऊंचा एक तेंदुआ जंगल से निकलकर घूमता-घूमता अहमदाबाद शहर में घुस आया तथा पांच व्यक्तियों को घायल करने के बाद श्रीमती इलाबेन नयनकुमार पटेल के घर में घुस गया जहां उसने उनके साढ़े तीन वर्षीय बच्चे पर हमला किया। श्रीमती इलाबेन ने असाधारण साहस दिखाया। उन्होंने केवल तेंदुए के जबड़ों से बच्चे को ही नहीं छीना वरन् तेंदुए को भी अपने घर के एक कमरे में अंदर बंद कर दिया। इस प्रकार वह इलाका वन्य जन्तु से मुक्त हो गया, बाद में चिड़ियाघर के अधिकारी तेंदुए को पिंजड़े में बंद करके ले गए। अहमदाबाद नगर-निगम ने श्रीमती पटेल को एक मान-पत्र, स्वर्ण पदक और 2,001.00/ रुपये का पुरस्कार दिया।

श्रीमती इलाबेन नयनकुमार पटेल ने तेंदुए की पकड़ से बच्चे को बचाने के अलावा उस हिंसक जंतु को अपने घर में बंद करने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

2. श्री स्वरूप कुमार दास, (मरणोपरांत)
   मार्फत, श्री एस० के० दास, हेड क्लर्क,
   गवर्नमेंट डिग्री कालेज, चिरमिरी,
   जिला सरगुजा, (मध्य प्रदेश)।

19 अगस्त, 1983, को सुरगुजा जिले में हसदो नदी के किनारे पर डिग्री कालेज, चिरमिरी के विद्यार्थियों का राष्ट्रीय सेवा योजना के अधीन शिविर लगा हुआ था। वहां नदी में स्नान करते हुए एक विद्यार्थी, श्री चित्तरंजन विश्वास अपना संतुलन नहीं रख सके और नदी में बहने लगे। उनके सहपाठी, श्री स्वरूप कुमार दास, उन्हें बचाने के लिये तुरन्त पाने के कारण, श्री दास स्वयं भी डूबने लगे। नदी के किनारे पर खड़े कुछ विद्यार्थी घटनास्थल की ओर दौड़े लेकिन वे असहाय खड़े रह गये क्योंकि उनमें से किसी को भी तैरना नहीं आता था। तथापि, एक आदिवासी लड़का नदी में कूद पड़ा और श्री दास को पानी से बाहर निकाल लाया। उन्हें मनेन्दर गढ़ के सेंट्रल अस्पताल ले जाया गया। जहां डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

श्री स्वरूप कुमार दास ने अपने सहपाठी का जीवन बचाने के प्रयास में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया और इस कार्य में अपनी स्वयं की जान गंवा दी।

3. श्रीमती मन्दिरा हुंडू, (मरणोपरांत)
   मार्फत, डा० एस० आर० मारवाह,
   बूज एन्कलेव,
   वाराणसी–221005

4. श्री अली जुनेद खान,
   एस० 20/57, कैनेडी रोड,
   वाराणसी कैंट–221002

3 नवम्बर, 1985, को सेंट जान स्कूल की दसवीं कक्षा के विद्यार्थियों का एक ग्रुप अपने अध्यापकों के साथ पिकनिक पर राजदारी जल-प्रपात गया। दोपहर के भोजन के बाद लगभग 1.30 बजे ग्रुप के कुछ लड़के और लड़कियां जल-प्रपात के ऊपर चलते हुए खेलने लगे। एक विद्यार्थी कुमारी अनुराधिका तनेजा, पानी में फिसल गई और वह तेज धारा में बहने ही वाली थी, जो उस दिन विशेषकर काफी तेज थी क्योंकि उस दिन बांध के जलद्वार खुले थे। कुमारी अनुराधिका को डूबते हुए देखकर एक अध्यापिका श्रीमती मन्दिरा हुंडू बालिका को बचाने के लिये पानी की तेज धारा में कूद पड़ीं, हालांकि वे स्वयं भी तैरना नहीं जानती थीं, इसके बाद वह सहायता के लिये चिल्लाईं इस पर श्री अली जुनेद खान ने तुरन्त पानी में छलांग लगा दी और कुमारी तनेजा को निकाल लाए। लड़की को बचाने के बाद वे श्रीमती मन्दिरा हुंडू की मदद के लिये वापस गए, जिन्हें दुर्भाग्य से उस समय तक प्रपात की तेज धारा गहरे पानी में ले गई थी और वे डूब रहीं थीं। उन्हें बाहर निकालने का श्री खान का प्रयास असफल हो गया, उन्होंने एक बांस के डंडे और रस्सी की व्यवस्था की और श्रीमती हुंडू को बचाने का प्रयास किया। चूंकि यह एक निष्फल और जोखिम भरा काम था, इसलिये पिकनिक दल

न

सतह पर पड़ी शिथिल चट्टानों की सहायता से आगे बढ़े। अंततोगत्वा, वे श्रीमती हुंडू के पास पहुंचने में सफल हो गये, जो तब तक पानी में डूब चुकी थीं, और वे उनके शरीर को चट्टानों के बीच से बड़ी मुश्किल से निकाल कर लाए। इस काम में श्री खान को जल-प्रपात के उस किनारे के अत्यंत निकट जाना पड़ा, जहां से पानी एक अत्यंत गहरी तंग घाटी में गिर रहा था और जो इस युवा और बहादुर लड़के के लिये गंभीर खतरे का कारण बन सकता था।

श्रीमती मन्दिरा हुंडू और श्री अली जुनेद खान दोनों ने अपनी-अपनी जान की परवाह किए बगैर जल-प्रपात में बहती हुई कुमारी तनेजा का जीवन बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया जिसमें श्रीमती मन्दिरा हुंडू को अपने जीवन का बलिदान करना पड़ा।

5. श्री दीपक दिगम्बर देवपुजारी, (मरणोपरांत)
मार्फत श्रीमती नैना देवपुजारी,
(नांन-लेंग्वेज टीचर),
मकान नं० 63/3, टाइप–II,
आर्डनेंस फैक्टरी भानदरा इस्टेट,
जवाहर नगर,
भानदरा–441906

आर्डनेंस फैक्टरी भानदरा के भूतपूर्व चार्जमैन, श्री डी० डी० देवपुजारी को 15 जून, 1985, को सर्विसेज स्टोर के निर्माण के लिये अपेक्षित विस्फोटक पदार्थ निट्रोसेल्यूलोस और निट्रोग्लैसरीन की डीवार्टरिंग की देख-रेख करने के लिये रोका गया था। उन्होंने अपनी निगरानी और मार्ग-दर्शन के अधीन डीवार्टरिंग आपरेशन को क्रियान्वित करने के लिये तीन डेंजर बिल्डिंग वर्कर्स को विशेष काम सौंपे। जब काम चल रहा था, तब विस्फोटक पदार्थ में अचानक आग लग गई और लगभग पूरे प्रोसेस रूम को अपने घेरे में ले लिया। जैसे ही आग लगने का पता चला, एक डेंजर बिल्डिंग वर्कर आग-आग चिल्लाता हुआ सुरक्षा के लिये तुरंत बाहर की ओर दौड़ा, उसके पीछे श्री देवपुजारी तथा एक और वर्कर भी बाहर निकला। दोनों आग से झुलस गए थे। श्री देवपुजारी ने अभी अपने जले हुए कपड़ों को अलग करना शुरू ही किया था, तभी उन्हें ध्यान आया कि तीसरा डेंजर बिल्डिंग वर्कर प्रोसेस रूम से बाहर नहीं निकला है उस पर, अपनी सुरक्षा की परवाह किए बगैर, श्री देवपुजारी आग में फंसे वर्कर को बचाने के लिये प्रोसेस कक्ष में पुनः प्रविष्ट हो गये। इस प्रक्रिया में श्री देवपुजारी को बुरी तरह अर्थात् 70 प्रतिशत जलने के घाव हो गये। बाद में, 17 जून, 1985, को जख्मों के कारण उनका निधन हो गया, दो डेंजर बिल्डिंग वर्कर्स की भी मृत्यु हो गई।

देवपुजारी ने जलते हुए कक्ष के भीतर फंसे वर्करों को बचाने के लिये किये प्रयास में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया और इस प्रक्रिया में अपना अमूल्य जीवन न्योछावर कर दिया।

सं० 14-प्रेज/87—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "उत्तम जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री महिमानन्द,
मोहल्ला चौतरा,
जिला चम्बा (हिमाचल प्रदेश)।

श्री महिमानन्द ने नीचे दिये चार अवसरों पर रावी नदी में डूबने से पांच व्यक्तियों की जानें बचाईं :—

1. श्री महिमानन्द ने जनवरी, 1981, में रावी नदी में एक दुकानदार को डूबने से उस समय बचाया जब उसका ट्रक जिसमें वह जा रहा था नदी में गिर गया।

2. उन्होंने 27 फरवरी, 1982, को भगत और राम हाकम चंद नामक दो अन्य व्यक्तियों की सहायता से श्रीमती श्रेष्ठ कुमारी की जान बचाई जो फिसल कर नदी में जा गिरी थी।

3. 8 जनवरी, 1986, को यह सुनकर कि कोई व्यक्ति रावी नदी में गिर गया है और वह नीचे की ओर बहता जा रहा है वह अपनी जान को जोखिम में डालकर उसकी सहायता के लिये गये और उस व्यक्ति को पानी से बाहर निकाल लाये।

4. स्थानीय आई० टी० आई० के प्रिंसिपल की लड़कियां कुमारी हरप्रीत कौर और कुमारी रविन्दर कौर 14 फरवरी, 1986, को रावी नदी में कूद गई थीं। यह सूचना मिलते ही श्री महिमानन्द ने बड़ी तत्परता बरती और हरप्रीत कौर को बचा लिया। उसे सिविल अस्पताल, चम्बा में दाखिल कराया गया लेकिन बाद में अत्याधिक सर्दी लग जाने और चोटें आने से उसकी मृत्यु हो गई। तथापि कुमारी रविन्दर कौर को बचा लिया गया।

श्री महिमानन्द ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए चार अवसरों पर रावी में डूबने से पांच व्यक्तियों की जानें बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया। उन्होंने अपने साथी व्यक्तियों के प्रति आत्मत्याग की भावना और दया का प्रदर्शन किया।

2. श्री राम चरण,
गांव कोटरा, पुलिस स्टेशन जखौरा
जिला ललितपुर (मध्य प्रदेश)।

13 अप्रैल, 1982, को जब महिलाओं और बच्चों समेत तेरह मजदूर मछली पकड़ने की नौका में बेतवा नदी पार कर रहे थे तो अचानक उनकी नौका भारी तूफान के कारण मझधार में फंस गई। नौका में सवार सभी व्यक्ति नदी में गिर पड़े और डूबने लगे। श्री राम चरण जो उस समय नदी किनारे बैठे थे, ने उन व्यक्तियों की दुर्दशा देखी

जो अपनी जानें बचाने के लिये संघर्ष कर रहे थे। हालांकि श्री राम चरण शारीरिक दृष्टि से विकलांग हैं फिर भी वह पास पड़ी एक टूटी नौका में सवार हुए और डूबते हुए व्यक्तियों के पास पहुंचे। एक-एक करके उन्होंने उन व्यक्तियों को नौका में खींचा और इस तरह आठ व्यक्तियों की जानें बचा लीं।

शारीरिक रूप से विकलांग होते हुए श्री राम चरण ने आठ व्यक्तियों को डूबने से बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया और ऐसा करने में उन्होंने अपनी परिसीमाओं और अपनी जान के खतरे की भी परवाह नहीं की।

3. श्री आनन्द कुमार रतूरी, (मरणोपरांत)
मार्फत श्रीमती गायत्री देवी रतूरी,
गांव छटकोट, पट्टी इदबलसीयून,
डाकखाना खाड़ा,
जिला पौड़ी गढ़वाल।

11 दिसम्बर, 1983, को एक आठ वर्ष आयु की लड़की कुमारी उमा नगर के भूतपूर्व नरेश के महल में बने पानी के टैंक में गिर गई। श्री आनन्द कुमार रतूरी जो संयोगवश उस समय वहीं थे, लड़की को बचाने के लिये तत्काल पानी के टैंक में उतरे। तथापि दुर्भाग्यवश टैंक में फिसलन होने के कारण वह अपने पैर नहीं जमा सके और लड़की के साथ ही डूब गये।

श्री आनन्द कुमार रतूरी ने लड़की को डूबने से बचाने के साहसिक प्रयास में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया उन्हें हालांकि इसके लिये अपनी जान भी गंवानी पड़ी।

4. श्री अजय इंडीयन,
148 सिविल लाईन्स,
बरेली (उत्तर प्रदेश)।

22 जुलाई, 1984, को श्री विजय इंडियन, गायक रात करीब 9.00 बजे रिहर्सल के बाद अपने साथी गायकों को विदा करने अपने घर से बाहर आये। उनके घर से करीब 10–12 गज दूर एक कोबरे ने जो सड़क पार कर रहा था एक लड़की की टांग को चारों ओर से घेरा डालकर लपेट लिया और उसको काटने ही वाला था। श्री इंडीयन तेजी से दौड़े और उन्होंने कोबरे को उसकी गर्दन से पकड़ लिया। लड़की की टांग को उसकी पकड़ से छुड़ाने के लिए उन्होंने सांप को जोर से खींचा और इस तरह वह कोबरा की पकड़ से लड़की को बचाने में सफल हो गये लेकिन कोबरा ने उन्हें काट लिया इतना होने पर भी उन्होंने सांप को छोड़ा नहीं और उसे एक लकड़ी के बक्से में बंद कर दिया (बाद में वह बक्सा लखनऊ चिड़ियाघर के प्राधिकारी ले गये)। श्री अजय बेहोश होकर गिर पड़े और उन्हें तत्काल अस्पताल ले जाया गया जहां डाक्टरों ने उन्हें ला-इलाज घोषित कर दिया। पास के गांव से एक सपेरे को तत्काल बुलाया गया और अपनी जड़ी-बूटियों की सहायता से वह श्री अजय को बचाने में सफल हुआ।

श्री अजय इंडियन ने खतरनाक कोबरा के चंगुल से लड़की की जान बचाने में असाधारण उत्साह, तत्परता और सूझ-बूझ का परिचय दिया और ऐसा करने में उन्होंने अपनी जान के खतरे की भी परवाह नहीं की।

सं० 15/प्रेज/87—राष्ट्रपति निम्नलिखित व्यक्तियों को "जीवन रक्षा पदक" प्रदान करने का सहर्ष अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री बनजा तुलसी छगन,
नगर पालिका फायर स्टेशन,
जूनागढ़, गुजरात।

जून, 1983 में असाधारण वर्षा और इसके परिणाम-स्वरूप आई बाढ़ के कारण जूनागढ़ शहर गंभीर रूप से प्रभावित हुआ। इसमें नेहरू पार्क सोसाइटी, गोवर्धननगर सोसायटी नं० 2, एस० टी० वर्कशाप के उत्तरी क्षेत्र जूनागढ़, काणी विश्वनाथ सोसायटी तथा दानपीठ सोसायटी के निवासियों को बहुत ही गंभीर खतरा पैदा हो गया। जूनागढ़ नगर पालिका के कर्मचारी श्री बनजा तुलसी छगन ने बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों के असहाय निवासियों को बचाने का कार्य अपने हाथ में लिया जो कि 8 फिट गहरे पानी में थे। श्रेष्ठ तैराक होने के कारण, वह रस्सी की सहायता से 18 व्यक्तियों की जानें बचाने में सफल रहे। एक बार तो उनकी पकड़ छूट गई और ऐसा लगा कि वह स्वयं ही डूब जायेंगे लेकिन प्रतिकूल परिस्थितियों से भयभीत न होकर उन्होंने अन्य व्यक्तियों को बचाने के अपने नेक इरादे से बचाव कार्य जारी रखा।

श्री बनजा तुलसी छगन ने अपनी जीवन की बिल्कुल परवाह न करते हुए 18 असहाय लोगों की जान बचाने में अपूर्व साहस और तत्परता का परिचय दिया।

2. श्री डाल मामद खामिसा,
पिपलाना, बाया बनथली,
जिला जूनागढ़, गुजरात।
3. श्री साधु रसिकलाल रामचरणदास,
ता० पिपलाना, बाया बनथली,
जिला जूनागढ़, गुजरात।

जून, 1983, में बहुत ज्यादा वर्षा और तेज बाढ़ के कारण जूनागढ़ शहर गंभीर रूप से प्रभावित हुआ और पिपलाना ग्राम तो सबसे अधिक प्रभावित ग्रामों में से एक था। हरिजनवास के 150 निवासी फंसे हुए थे और उनकी जानें संकट में थीं। श्रीश्री डाल मामद खामिसा और साधु रसिकलाल रामचरणदास ने पहल की और असहाय ग्रामवासियों को बचाने के लिये बचाव कार्य का आयोजन किया। वे अपनी कमर में रस्सी बांध कर बाढ़ के पानी में कूद गए और उन्होंने 150 व्यक्तियों को डूबने से बचाया।

श्री डाल मामद खामिसा और श्री साधु रसिकलाल रामचरणदास ने अपने जीवन की बिल्कुल परवाह न करते हुए 150 बाढ़ पीड़ितों की जानें बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

4. श्री हरजी भाई पीठाभाई जादव,
तालती तथा मंत्री, पाडाराडी (थाड़),
ता० मानवदार, जिला जूनागढ़, गुजरात।

जून, 1983 में बहुत ज्यादा वर्षा और तेज बाढ़ के कारण जूनागढ़ शहर गंभीर रूप से प्रभावित हुआ और पाड़ाराडी, सबसे ज्यादा प्रभावित हुए ग्रामों में से एक था। ग्राम के पटवारी श्री हरजीभाई पीठाभाई जादव असहाय ग्रामीणों की अमूल्य सेवा के लिये इस अवसर पर आगे आये। वह 5 फुट गहरे, तेज बहते हुए बाढ़ के पानी में कूद पड़े और पाडाराडी ग्राम के हरिजनवास के 30 निवासियों को बचा लिया। उन्होंने क्षति के बारे में तालूक मुख्यालय को भी तत्काल सूचना दी।

श्री हरजीभाई पीठाभाई जाधव ने अपनी जान की परवाह न करते हुए 5 असहाय ग्रामीणों की जान बचाने में असाधारण साहस और तत्परता दिखाई।

5. श्री मोहिन्दर पाल शर्मा,
एल० एल० बी० के तीसरे सत्र के छात्र,
विधि संकाय,
जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू।

28/29 अक्तूबर, 1983 को रात में श्री मोहिन्दर पाल शर्मा वैष्णो देवी की तीर्थयात्रा से लौट रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक लड़की को लड़खड़ाते हुए और पहाड़ी की तरफ गिरते हुए देखा। वह तुरन्त कूद पड़े और लड़की को पीछे से पकड़ लिया व उसे एक सुरक्षित स्थान पर ले आये। ऐसा करते समय वह अपना संतुलन खो बैठे और लोहे की रेलिंग पर गिर पड़े जिसका एक टुकड़ा उनकी बाजू में घुस गया।

24 मार्च, 1984 को श्री सुदर्शन सिंह, जो कि एक स्कूटर पर सवार थे, बी० एस० एफ० पुल प्लौरा (जम्मू) के समीप एक जीप से टकरा जाने के बाद एक नाले में गिर गए। उस समय श्री मोहिन्दर पाल शर्मा एक मैटाडोर में वहां से गुजर रहे थे। वह भीड़ को देखकर वहां गये और दुर्घटना का पता चलते ही शीघ्र ही नाले के भीतर गए तथा दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति को उठा लिया, जिसमें से खून बह रहा था और वह बेहोश था। वह उसे सड़क पर ले आये। अंधेरा होने और आसपास कोई चिकित्सा सहायता उपलब्ध न होने के कारण श्री शर्मा एक जीप में लिफ्ट लेकर उसे जम्मू स्थित एस० एम० जी० एस० अस्पताल ले गए।

श्री मोहिन्दर पाल शर्मा ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए दोनों अवसरों पर निःसहाय पीड़ितों की जान बचाने में अपूर्व साहस और तत्परता दिखाई।

6. मास्टर अशोक शेशप्पा बिन्नल,
ग्राम लुक्कुंडी, तालुक डाडाग,
जिला धारवाड़, कर्नाटक।

26 अप्रैल, 1983 को कुमारी शारदाव्वा, जिसकी आयु 10 वर्ष थी, पानी लाने के लिये अपनी मां के साथ लुक्कुंडी ग्राम में एक कुंए पर गई। अचानक, बालिका उस कुंए में गिर गई। मास्टर अशोक बिन्नल, जो कि पास ही में खेल रहे थे, को इसका पता लगते ही वह तुरंत कुंए में कूद गये और बालिका को बचा लिया।

इस प्रकार मास्टर अशोक शेशप्पा बिन्नल ने अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए बालिका को डूबने से बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

7. श्री पंचाक्षरी स्वामी,
होम गार्ड, के० आर० नगर यूनिट,
बेदाराहल्ली ग्राम, के० आर० नगर,
तालुक, मैसूर जिला, कर्नाटक।

18 सितम्बर, 1985 को बेत्ताडपुरा की निवासी, 36 वर्षीय श्रीमती राधम्मा श्रीमती पुत्तम्मा (40 वर्षीय) के साथ बेदाराहल्ली जा रही थीं। पानी पीते समय श्रीमती राधम्मा अचानक ही बेदाराहल्ली के समीप चम राजा लैफ्ट कैनाल में गिर गई। श्रीमती पुत्तम्मा भी अपनी साथिन को बचाने के प्रयत्न में कैनाल में गिर गईं और दोनों महिलाएं 25 फुट गहरे कैनाल में डूबने लगीं। वे सहायता के लिये चिल्लाईं। श्री पंचाक्षरी स्वामी ने, जो संयोगवश उस रास्ते से गुजर रहे थे, यह आवाज सुनी तो वह शीघ्र ही कैनाल में कूद गये और दोनों महिलाओं को बचा लिया। उन्होंने शीघ्र ही उन अर्द्ध-मूर्छित महिलाओं का ग्रामवासियों की मदद से प्राथमिक उपचार भी किया।

श्री पंचाक्षरी स्वामी ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए डूबती हुई महिलाओं को बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

8. मास्टर राजेन्द्र जयवंत पेडनेकर
गवर्नमेंट माडल स्कूल फार ब्वायज़
कोडीबाग कारवर जिला कर्नाटक।

26 अगस्त 1983 को कोडीबाग स्थित गवर्नमेंट माडल प्राइमरी स्कूल फार ब्वायज़ की दूसरी कक्षा का एक छात्र मास्टर आत्मा राम वायन पेडनेकर अचानक ही स्कूल कंपाउंड में एक पुराने कुएं में गिर गया। कुंए में साइड की दीवारें नहीं थीं और भारी वर्षा के कारण डूबा हुआ था। इस घटना को देखते ही 7वीं कक्षा के छात्र मास्टर राजेन्द्र जयवंत पेडनेकर ने कुएं में छलांग लगा दी और डूबते हुए बालक को बचाने में सफल हुए।

मास्टर राजेन्द्र जयवंत पेडनेकर ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए डूबते हुए बालक को बचाने में असाधारण साहस और तत्परता का परिचय दिया।

9. श्री रंगास्वामी
शांतीग्राम डुड हुबली
हसन जिला
कर्नाटक ।

28 अक्तूबर 1982 को शांतीग्राम गांव की एक 12 वर्षीय लड़की कुमारी रत्नम्मा पानी निकालते हुए अचानक ही कुएं में गिर गई । यह देखकर वहां खड़ी दूसरी लड़की सहायता के लिए चिल्लाई । कई लोग एकत्र हो गए परन्तु किसी ने भी बालिका को बचाने की हिम्मत नहीं की । 80 फुट गहरे कुएं में असहाय डूबती हुई बालिका को देखकर श्री रंगास्वामी ने तत्काल कुएं में छलांग लगा दी और उसकी जान बचायी ।

श्री रंगास्वामी ने अपने जीवन की परवाह न करते हुए डूबती बालिका को बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता दिखाई ।

10. श्री सोफन
मार्फत श्री एस० डी० काम्बले
डाकखाना व मुकाम नासलपुर
तालुक राईबाग, जिला बैलगांव
कर्नाटक ।

12 मई 1983 को, श्रीमती शानाक्का पानी लेने के लिए कुएं की तरफ जा रही थी । सीढ़ियों के जरिए कुएं के पास जाते समय उनका पैर फिसल गया और वह कुएं में गिर गईं । कुएं में पानी की सतह भूमि तल से लगभग 60 फुट थी और पानी की गहराई लगभग 30 फुट और थी । श्री सोफन ने देखा कि महिला अपनी जान बचाने के लिए हाथ-पैर मार रही है । वह तत्काल कुएं में कूद पड़े और उसे डूबने से बचा लिया ।

श्री सोफन ने स्वयं अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए डूबती हुई महिला की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

11. श्री डोमीनिक जैकब
कलापरामिल हाऊस
कुट्टुमकल—डाकखाना, सलेरमाला
उडुमबन्चोला तालुक, इडुक्की जिला
केरल ।

20 दिसम्बर 1982 को एस० डी० ए० इंगलिश हाई स्कूल नेडुमकन्डाम का एक दस वर्षीय छात्र मास्टर बिजूमन अचानक स्कूल के कुएं से पानी निकालते समय उसमें गिर गया । कुएं में पानी की सतह भूमि—तल से लगभग 10 फुट नीचे थी और घटना के समय पानी की गहराई लगभग 6 फुट थी । दुर्घटना को देखकर उसी स्कूल के दसवीं कक्षा के एक छात्र श्री डोमीनिक जैकब तत्काल कुएं में कूद पड़े और लड़के को डूबने से बचा लिया । जो लोग इस घटना को देख रहे थे उन्होंने रस्सी की सहायता से दोनों लड़कों की कुएं से बाहर आने में सहायता की ।

श्री डोमीनिक जैकब ने स्वयं अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए मास्टर बिजूमन की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

12. श्री जान लारेंस,
थोटाथिल वीडू, नीनडाकारा मुरी
नीनडाकारा ग्राम, करुणागपल्ली तालुक
क्वीलोन जिला केरल ।

21 अगस्त 1985 को सवेरे हर रोज की तरह नैडाकारा में लगभग 100 देसी नावें अरब सागर में मछली पकड़ने के लिए रवाना हुईं । जब वे मछली पकड़ने के लिए रवाना हुए थे तो उस समय सागर सामान्य था । शीघ्र ही सागर अशांत हो गया और अचानक तूफान आ गया तथा मछियारों ने वापिस तट की ओर लौटने का प्रयत्न किया । किन्तु वे तूफान में घिर गए थे । लहरें 2½ से 3 मीटर ऊंची उठ रही थीं जिससे अनेक यन्त्रचालित मछली—डोंगे टूट गए । लगभग 20 देसी नावें टूट गई थी और लगभग 150 मछियारे अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे । उनकी दुर्दशा देखकर श्री जान लारेंस तूफानी समुन्द्र को चुनौती देते हुए तत्काल अपनी स्वयं की नाव में समुन्द्र में रवाना हुए । उन्होंने समुन्द्र में कई चक्कर लगाए और उन अनेक मछियारों को बचा लिया जो अपनी जान बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे । एक छोटी सी नाव के साथ अशांत तथा खतरनाक समुन्द्र में जाने की हिम्मत करके श्री जान लारेंस ने स्वयं को भारी खतरे में डाला था और इस प्रक्रिया में उनको शारीरिक चोटें भी आईं थी और उनकी नाव को भारी नुकसान पहुंचा था ।

श्री जान लारेंस ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए समुन्द्र में डूबने से कई जानें बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया ।

13. श्री कारुथकुंजु नानु
वलिया चंगातारा आदिमुरिइल वीडु
वालीकोडे—कोट्टायम
पतनमतिट्टा जिला
केरल ।

24 मार्च 1985 को 65 वर्षीय श्री कारुथकुंजु नानु और श्रीमती पंकजाक्षी जो लगभग 63 वर्ष की हैं अपने पड़ोस के नारियल के बाग में थे और नारियल तोड़ने का काम चल रहा था । एक नारियल बाग में स्थित कुंए में गिर गया और श्रीमती पंकजाक्षी कुएं के आर-पार रखे हुए लकड़ी के लट्ठे पर खड़े होकर कुएं में झांकते फिसल गईं और 45 फुट गहरे कुएं में गिर गईं जिसमें पानी का स्तर 5 फुट गहरा था और जिसका तल कीचड़दार था । वह कीचड़दार पानी में डूबने लगीं और जीवन के लिए संघर्ष करने लगीं । इसे देख कर श्री कारुथकुंजु नानु बिना अपनी आयु का विचार किए तत्काल कुएं में उतर गए और महिला को पकड़ लिया और उसे पानी के ऊपरी तल तक ले आए जिसमें लगभग 45 मिनट लगे । इस बीच अन्य मौजूद लोगों

ने रस्सी से बंधी हुई एक कुर्सी कुएं में लटका दी। उन्होंने उसे (महिला को) कुर्सी पर बैठा दिया और कुएं के नज़दीक खड़े अन्य व्यक्तियों ने उसे सुरक्षित ऊपर खींच लिया।

श्री कारुथकुंजु नानु ने स्वयं अपनी जान के खतरे की परवाह किए बिना बूढ़ी महिला की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

14. कुमारी खादीजा
पुत्री श्री अलीयार
अराकल पलारीमंगलम
पोथानीकाड ग्राम
अरणाकुलम जिला
केरल।

15 सितम्बर 1984 को 4 1/2 वर्ष की आयु का एक बच्चा मास्टर मोहम्मद अचानक अपने मकान के प्रांगण वाले कुएं में गिर गया जो भूमि तल से 28 फुट नीचे था और जिसमें 5 फुट गहरा पानी था। उसकी 12 वर्षीय बहन कुमारी खादीजा जो पड़ोस के मकान में मौजूद थी ने इस घटना को देख लिया था। वह तत्काल सहायता के लिए चिल्लाती हुई कुएं की तरफ दौड़ी और अपने डूबते हुए भाई को बचाने के लिए कुएं में कूद पड़ी। चिल्लाने की आवाज़ सुन कर पड़ोसी वहां इकट्ठे हो गए और लड़की को कुएं में डूब रहे बच्चे को पकड़े हुए देखा। कुमारी खादीजा के चाचा श्री अब्दुल रहमान कुएं की तरफ दौड़े और उन्होंने उस रस्सी को कुएं में फेंका जिसे पानी निकालने के काम में इस्तेमाल किया जाता था। लड़की ने रस्सी को पकड़ लिया और कुएं की दीवार का सहारा ले लिया। इसी बीच एक बांस की सीढ़ी कुएं में नीचे लटकाई गई जिसकी सहायता से कुमारी खादीजा अपने भाई सहित ऊपर चढ़ आई।

कुमारी खादीजा ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए कुएं में डूबते हुए अपने भाई की जान बचाने में उत्कृष्ट साहस और तत्परता का परिचय दिया।

15. श्री रामचन्द्र अय्यर चन्द्रशेखर,
बाईपू मैडम, बालोंचूज़ी,
डाकखाना—मालासोरी,
पतनमतिट्टा जिला, केरल।

28 जून, 1985 को, दो मध्यम आयु व्यक्ति, सर्वश्री एस० मोहनन और के० योहानन एक बेड़े के रूप में इकट्ठे बंधे हुए कुछ जलाऊ लकड़ियों के टुकड़ों को पकड़े हुए बाढ़ग्रस्त अच्चनकोइल नदी पार कर रहे थे। तेज बहती धारा के कारण बेड़ा टूट गया। दोनों पानी में बह रहे थे और 30 फुट गहरे पानी में अपनी जानें बचाने के लिए संघर्ष कर रहे थे। सहायता के लिए उनकी चिल्लाने की आवाज़ को सुनकर नदी के किनारे बहुत से व्यक्ति एकत्रित हो गए थे। 17 वर्षीय श्री रामचन्द्र अय्यर चन्द्रशेखर तत्काल नदी में कूद पड़े और उनकी तरफ तैर कर गए और उन्हें सुरक्षित किनारे पर ले आए।

श्री रामचन्द्र अय्यर चन्द्रशेखर ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए, दो व्यक्तियों की जानें बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

16. मास्टर सरामब्बिकल कृष्णनकुट्टी रणदीप,
डाकखाना थामारयूर, वाया चवाक्कड,
त्रिचूर जिला, केरल।

19 सितम्बर, 1985 को श्री कृष्ण हाई स्कूल, गुरुवायूर के छात्र मास्टर रणदीप (आयु 14 वर्ष) और मास्टर एस० साथीसन् (आयु 9 वर्ष) अन्य लड़कों के साथ स्कूल के समीप एक तालाब पर अपने हाथ और खाने के डिब्बे धोने के लिए गए। ऐसा करते हुए, मास्टर साथीसन, जोकि तैरना नहीं जानते थे, तालाब में गिर गए। वर्षा ऋतु का समय था और तालाब में पानी की गहराई लगभग 30 फुट थी। तालाब में लड़के को जीवन से संघर्ष करते हुए देखकर मास्टर रणदीप शीघ्र ही उसमें कूद गए और उस लड़के को कमीज के कालर से पकड़कर सुरक्षित खींच लाए।

इस प्रकार मास्टर सरामब्बिकल कृष्णकुट्टी रणदीप ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए डूबते हुए लड़के को बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

17. कुमारी गंगा बाई,
पुत्री श्री गजबलाल सज्जन,
गोदारपुरा (डाकखाना ओंकारेश्वर)

24 जून, 1985 को सायं लगभग 4 बजे एक धोबी श्री गजबलाल सज्जन की 13 वर्षीय पुत्री कुमारी गंगा बाई नर्मदा नदी के किनारे कपड़े धो रही थी। एक अन्य परिवार, जिसमें मां, पुत्र व दो पुत्रियां थीं, वहां पर नहा रहा था। अचानक ही बालक, जो कि 10 वर्ष का था, गहरे पानी में फिसल गया और डूबने लगा। उसकी दोनों बहनों ने उसे बचाने का प्रयत्न किया लेकिन वे भी धार की चपेट में आ गईं और डूबने लगीं। तीनों बच्चों को डूबता देखकर उनकी मां सदमे से बेहोश हो गई। यह देखकर गंगा बाई अपने जीवन की परवाह न करते हुए शीघ्र ही नदी में कूद गई और तीनों बच्चों को डूबने से बचाने में समर्थ रहीं।

बहुत ही छोटी आयु में कुमारी गंगा बाई ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करते हुए तीनों बच्चों की जानें बचाने में अद्वितीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

18. श्री हेम राज पवार,
होम गार्ड नं० 50—क,
मार्फत जिला कमांडेंट,
होम गार्ड्स, बैतुल (म० प्र०)।

22 जून, 1985, को कुमारी शबाना, जोकि गवर्नमेंट कालेज, बैतुल, में एल० एल० बी० की परीक्षा में बैठी थीं, ने आत्महत्या के इरादे से कैम्पस में बने कुएं में अचानक छलांग लगा दी। आसपास में उपस्थित कुछ छात्रों ने इस घटना को देखा और वे सहायता के लिए चिल्लाए। उनकी आवाज को सुनकर, श्री हेमराज पवार, जोकि परीक्षा के दौरान

अनुशासन बनाए रखने के लिए कालेज कैम्पस में कम्पनी क्वार्टर मास्टर हवलदार रेवाराम के साथ ड्यूटी पर थे, घटनास्थल पर पहुंचे और शीघ्र ही कुएं में कूद गए जोकि जमीन के स्तर से लगभग 40 फुट नीचे था और जिसमें पानी की गहराई 15 फुट थी। उन्होंने लड़की को बालों से पकड़ लिया और कुएं की दीवार के सहारे से डूबती हुई लड़की व स्वयं को पानी की सतह से ऊपर रखा।

इसी बीच कुएं में एक रस्सी डाली गई। कुएं के आसपास एकत्र हुए लोगों ने लड़की को कुएं से खींच लिया। दो होम गार्डों ने उसको प्राथमिक चिकित्सा दी।

श्री हेम राज पवार ने अपने जीवन के खतरे की परवाह न करते हुए लड़की की जान बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता का परिचय दिया।

19. श्री विक्रम सिंह यादव,
पुत्र श्री गेसुलाल यादव, चपरासी,
जिला केन्द्रीय सहकारिता बैंक,
सिहोर (म० प्र०)।

12 मई, 1985, को लगभग 11 बजे (पूर्वाह्न) तीन युवक श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह, श्री राजेन्द्र प्रताप सिंह और श्री जय प्रकाश सिंह, सीवन नदी, चंदवीर पुल के पास नहाने के लिए गए। इस स्थान पर पानी की गहराई लगभग 30–32 फुट थी। नहाते समय, अचानक श्री शैलेन्द्र प्रताप सिंह डूबने लगा। उसको बचाने के लिए अन्य दोनों लड़के नदी में कूद पड़े। तीनों लड़के तैरना नहीं जानते थे। श्री विक्रम सिंह, जो स्कूल कैंपस के पास कुछ पढ़ रहे थे, सहायता के लिए उनके चिल्लाने की आवाज को सुनकर दुर्घटना स्थल की ओर दौड़े। पुल पर काफी संख्या में लोग इकट्ठे हो गए थे परन्तु किसी में भी यह साहस नहीं था कि नदी में कूद कर डूबते हुए लड़कों को बचा सकें। श्री विक्रम सिंह ने, अपनी जान की परवाह किए बिना, उनको बचाने के लिए नदी में छलांग लगा दी और उसने एक–एक करके तीनों लड़कों को नदी में से निकाला। श्री शैलेन्द्र सिंह को जिला अस्पताल में पहुंचाया गया क्योंकि उसकी दशा बहुत गंभीर थी। तथापि, दो घंटे के बाद उसकी मृत्यु हो गई।

अपनी जान के अत्यधिक खतरे की भी परवाह न करते हुए श्री विक्रम सिंह यादव ने उन दो युवकों को बचाने में अनुकरणीय साहस तथा तत्परता दिखाई।

20. श्री दत्तात्रय गोपाल कदम,
मुकाम तथा डाकखाना करुल,
तालुक वैभववादी,
जिला सिंधदुर्ग (महाराष्ट्र)।

22 जुलाई, 1984, को, एक ट्रक नं० एम० एच० एल०–7166 सड़क के किनारे पर बनी मुंडेर से टकरा गया और लगभग 200–300 फुट गहरी खाई में गिर गया। उस समय श्री कदम, वहां से गुजर रहे थे, और उन्होंने दुर्घटना होते देखी तथा तत्काल गिरे हुए ट्रक के पास पहुंचे। उन्होंने देखा कि ट्रक के नीचे तीन व्यक्ति फंसे हुए थे। ट्रक के पास पहुंचने के लिए वहां कोई पगडंडी आदि नहीं थी, वे किसी अन्य रास्ते से होकर उस स्थान पर पहुंचने में सफल हुए। वह एक-एक तीनों दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान पर ले आए और उनकी प्राथमिक चिकित्सा की तथा उन्हें बस द्वारा कोल्हापुर की डिस्पैंसरी भेजने का प्रबंध किया।

श्री दत्तात्रय गोपाल कदम ने अपनी जान की परवाह किए बिना, गहरी खाई में गिरे हुए ट्रक में फंसे तीन व्यक्तियों को बचाने में अनुकरणीय साहस दिखाया।

21. श्री ध्यानेश्वर नामदेवराव शिन्दे,
गांव भोसा पी० एम० येवतमल सिटि,
तालुका तथा जिला येवतमल (महाराष्ट्र)

28 जनवरी, 1986, को, 2½ साल का एक बच्चा, नरेश बीथोबा रजने, अहाने में खेलते समय, अचानक एक कुंए में गिर पड़ा जो उसके घर से लगभग 100 फुट की दूरी पर था। कुआं 40 फीट गहरा और 12 फीट चौड़ा है और उसमें पानी का स्तर 3 से 4 फुट था। उसकी मां, जो उसको देख रही थी। उसे कुएं में गिरता हुआ देखकर सहायता के लिए चिल्लाती हुई कुएं की तरफ भागी। उसकी चीखों ने श्री ध्यानेश्वर नामदेव राव शिंदे के ध्यान को आकृष्ट किया जो कि लगभग 150 फुट की दूरी पर अपने दोस्त के घर में पढ़ रहे थे। वह तत्काल कुएं की ओर भाग कर वहां पहुंचे और पानी निकालने वाली रस्सी की सहायता से कुंए में उतर गए। उन्होंने बच्चे को (*जो बेहोश हो गया था*) पानी से बाहर निकाला और उसे उस बाल्टी में रखा जो वहां लोगों ने कुएं में लटका दी थी। बच्चे को कुएं से निकाल लिया गया और जनरल अस्पताल पहुंचा दिया गया।

श्री ध्यानेश्वर नामदेवराव शिंदे ने अपनी जान की परवाह न करते हुए बच्चे को बचाने में अनुकरणीय साहस और तत्परता दिखाई।

22. श्री किरन अनंत वर्तक,
मुकाम तथा पोस्ट अगाशी,
तालुक बसाई,
जिला थाने (महाराष्ट्र)

23. श्री विनोद नारायण वर्तक,
मुकाम तथा पोस्ट अगाशी,
तालुक बसाई,
जिला थाने (महाराष्ट्र)।

8 अगस्त 1985 को कुमारी रजनी गोपाल वर्तक अपने कपड़े धोने कुएं पर गई और अचानक उसमें गिर गई। इस दुर्घटना को दो स्कूल जाने वाले बच्चों ने देखा जो उधर से गुजर रहे थे। वे सहायता के लिए चिल्लाए। श्री विनोद नारायण वर्तक और श्री किरन अनंत वर्तक जो लगभग 100 फुट की दूरी पर थे ने चिल्लाने की आवाज सुनी और कुएं की तरफ दौड़े। वे दोनों तत्काल ही कुएं में कूद पड़े और लड़की को बाहर निकालकर उसकी जान बचाई।

श्री किरन अनंत वर्तक और श्री विनोद नारायण वर्तक ने अपनी जान की बिल्कुल परवाह न करते हुए डूबती हुई लड़की की जान बचाने में अनुकरणीय साहस व तत्परता का परिचय दिया।

24. श्री शेख खानसाहेब उसमानिया
सेंट सोवियर्स हाई स्कूल,
अहमदनगर।

11 सितम्बर, 1985 को एक 17 वर्ष की लड़की कुमारी सैयद साफिया नादिर कुएं से पानी निकालते हुए अचानक उसमें गिर गई। आस-पास के लोगों ने इसे देखा और कुएं के चारों ओर इकट्ठे हो गए। उनमें से एक श्री शेख खानसाहेब उसमानिया ने अपनी सूझबूझ दिखाते हुए तत्काल ही एक रस्सा लिया और उसे चरखी के लकड़ी के फ्रेम से बांधा। रस्सी की सहायता से वे कुएं में गए जहां पानी की सतह 12 से 15 फुट थी। जब उन्होंने सतह पर भी लड़की नहीं देखी तो उन्होंने पानी में डुबकी लगाई और उसे पकड़ कर सतह पर ले आए। फिर उन्होंने उसकी कमर के चारों ओर एक रस्सा बांधा और वहां इकट्ठे हुए लोगों से उसे बाहर निकालने को कहा। इस कार्य में उनके दोनों हाथ घायल हो गए।

श्री शेख खानसाहेब उसमानिया ने अनुकरणीय साहस का परिचय दिया और अपनी जान की परवाह न करते हुए लड़की की जान बचाने में समय पर कार्रवाई की और बुद्धिमत्ता दिखाई।

25. श्री सुभाष तुकाराम महातरे,
मुकाम तथा पोस्ट कोन ग्राम,
तालुक भिवंडी जिला थाने (महाराष्ट्र)।

16 जून, 1981 को एक महिला ने अपने बच्चे को थाने नाले में फैंक दिया और आत्महत्या करने के लिए स्वयं उसमें कूद पड़ी। श्री सुभाष तुकाराम महातरे जो अपनी साइकिल पर पुल के ऊपर से गुज़र रहे थे, ने इसे देखा। वे रुक गए और तत्काल ही नाले में कूद पड़े। पहले उन्होंने बच्चे को पकड़ा और उसे एक मछियारे को पकड़ा दिया जो बहती हुई ट्यूब पर मछलियां पकड़ रहा था। तब वे डूबती हुई महिला की ओर तैरे, उसे पकड़ लिया और उस महिला के साथ नाले में एक खम्भे से तब तक चिपके रहे जब तक कि एक मछियारा नाव में उन तक पहुंच नहीं गया। श्री महातरे ने उस बच्चे व महिला को नाव में डाला और उन्हें किनारे पर ले आए।

श्री सुभाष तुकाराम महातरे ने अपनी जान के खतरे की परवाह न करके दो जानों को बचाने में अनुकरणीय साहस व चुस्ती दिखाई।

26. श्री विजय कुमार पटनायक,
गांव पड़ापला डाकखाना पंकापाल,
थाना तिरतौल, जिला कटक।

1 मई, 1983 को एक नाव जिसमें कुछ यात्री सवार थे, महानदी नदी में डूब गई। डूबते हुए यात्रियों से सहायता के लिए पुकार सुने जाने पर श्री विजय कुमार पटनायक जो नदी के किनारे पर थे तत्काल ही नदी में कूद पड़े और अभागे व्यक्तियों की ओर तैरने लगे। उन्होंने डूबने से सात व्यक्तियों की जानें बचाईं लेकिन फिर भी चार व्यक्ति इस दुर्घटना में डूब गए।

श्री विजय कुमार पटनायक ने अपनी जान की परवाह न करते हुए सात व्यक्तियों की जानें बचाने में अनुकरणीय साहस व तत्परता का परिचय दिया।

27. श्री कुन्दन कुमार महावर,
मार्फत श्री चन्दालाल महावर,
कोलियों का बास तम्बाकू पाड़ा, लालसोट,
जिला, जायपुर।

12 अगस्त 1985 को मास्टर घनश्याम खण्डेलवाल अपने परिवार के सदस्यों के साथ "मेडा" झील पर पिकनिक के लिए गए थे। झील के किनारे पर जाते समय वह फिसल गए और उसमें गिर गए। इसे देखकर श्री कुन्दन कुमार महावर ने तत्काल ही झील में छलांग लगा दी और डूबते हुए लड़के को पानी से बाहर खींच लाए।

श्री कुन्दन कुमार महावर ने अपनी जान की परवाह न करके डूबते हुए लड़के की जान बचाने में अनुकरणीय साहस व तत्परता का परिचय दिया।

28. श्री गुंजन मिश्रा,
हाउस नं० 81, चौथियाना मैनपुरी (उ० प्र

8 मार्च 1985 को मास्टर गुंजन मिश्रा कुछ लड़कों के साथ चौथियाना मौहल्ला में एक टूटे से मकान में पतंग उड़ा रहे थे। एक 2½ वर्ष का लड़का चेतन चतुर्वेदी जो 4 फुट गहरे पानी के टैंक के पास खेल रहा था अचानक उसमें गिर गया। गुंजन मिश्रा के भाई मास्टर गौरव ने इसे देखा और सहायता के लिए पुकारा। मास्टर गुंजन मिश्रा तत्काल ही पानी के टैंक में कूद पड़े और बच्चे को सुरक्षित बाहर निकाल लाए। इस कार्य में वे घायल हो गए।

इस प्रकार मास्टर गुंजन मिश्रा ने अपनी जान की परवाह न करके बच्चे की जान बचाने में अदम्य साहस व बुद्धिमत्ता का परिचय दिया।

29. कुमारी हिमानी उनियाल,
41/1, सुन्दरवाला कैंप,
रायपुर देहरादून।

12 मार्च 1983 को कुमारी हिमानी उनियाल और मास्टर किशोर (उमर 3 वर्ष) एक 3½ फुट गहरे पानी के तालाब के पास खेल रहे थे। खेलते-खेलते मास्टर किशोर टैंक में गिरने वाले थे कि कुमारी उनियाल ने उसकी टांगें पकड़ लीं और सहायता के लिए पुकारा। उनकी चिल्लाने की आवाज़ सुनकर लोग तालाब की ओर दौड़े और बच्चे को तालाब में गिरने से बचा लिया। यदि बच्चा संघर्ष करता तो संभवतः कुमारी उनियाल भी तालाब में गिर जातीं और दोनों ही डूब जाते।

कुमारी हिमानी उनियाल ने अपनी जान की परवाह न करके पानी के तालाब में बच्चे को गिरने से बचाने में अदम्य साहस व बुद्धिमता का परिचय दिया।

सु० नीलकण्ठन, राष्ट्रपति का उप सचिव

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 19 जनवरी 1987

संकल्प

सं० एफ० 6(1)-पी० डी० /86—1986-87 के वित्तीय वर्ष के लिये सामान्य भविष्य निधि और इसी प्रकार की अन्य निधियों के ब्याज की दर के सम्बन्ध में दिनांक 14 अगस्त, 1986 के समसंख्यक संकल्प के द्वारा यथा संशोधित, दिनांक 30 अप्रैल, 1986 के इस मंत्रालय के संकल्प संख्या एफ० 6(1) पी० डी०/86 के सन्दर्भ में।

2. आम जानकारी के लिये यह भी घोषित किया जाता है कि इन निधियों के ऐसे अभिदाताओं को, जो 1986-87 के दौरान सेवानिवृत्त हुए हों, अथवा जिन्होंने 1986-87 में सेवा छोड़ी हो, यह विकल्प प्राप्त होगा कि उन पर 1986-87 में अपनी सेवा अवधि में इस मंत्रालय के दिनांक 22 मई, 1985 के संकल्प संख्या एफ० 6(2)-पी० डी०/85 में, वर्ष 1985-86 के लिये विनिर्दिष्ट ब्याज की दर और प्रोत्साहन बोनस लागू होता रहे।

3. जिन व्यक्तियों के भविष्य निधि के दावे निपटा दिये गये हैं, उन्हें भी इस विकल्प का प्रयोग करने की अनुमति दी जाये।

4. आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

वी० बालसुब्रह्मण्यन,
अपर बजट अधिकारी

पर्यावरण और वन मंत्रालय

(पर्यावरण, वन और वन्यजीव विभाग)

नई दिल्ली-110003, दिनांक 8 जनवरी, 1987

संकल्प

विषय:—वन संरक्षण और प्रबन्ध के लिये प्रबोधन (वन संरक्षण में क्षेत्रीय सलाहकार दल) हेतु क्षेत्रीय सलाहकार दलों की स्थापना।

सं० 37-3/85-एफ० पी०—सरकार ने 5 मई, 1986 के समसंख्यक संकल्प के पैरा 8 के तहत सलाहकार दलों से अनुरोध किया था कि वे संकल्प के विचारार्थ विषयों के अन्तर्गत शामिल विभिन्न मामलों से संबंधित अपनी रिपोर्ट 31 अक्तूबर, 1986 से पहले प्रस्तुत कर दें। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि इन क्षेत्रीय दलों को समस्याओं की जानकारी के लिये संबंधित राज्यों का दौरा करना है, दलों के लिये अपनी रिपोर्टें निर्धारित समय तक प्रस्तुत करना संभव नहीं होगा। अतः भारत सरकार ने यह निर्णय किया है कि ये क्षेत्रीय सलाहकार दल अपनी रिपोर्टें 31 मार्च, 1987 तक प्रस्तुत कर दें।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी संबंधितों को भेजी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को आम जानकारी हेतु भारत के राजपत्र में अधिसूचित किया जाये।

एम० के० रणजीत सिंह, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 5th February 1987

No. 13-Pres/87.—The President is pleased to approve the award of "Sarvattam Jeevan Raksha Padak" to the persons mentioned as under :—

1. Smt. Ilaben Nayankumar Patel,
Bungalow No. 12, Ganjvihar,
Nutan Patidar Society,
Jawahar Chowk, Maninagar,
Ahmedabad-380008.

On the 4th February, 1984 at about 6.00 A.M., a panther, 7-1/2 feet long and 2-1/2 feet in height, apparently wandered off from a forest, entered the city of Ahmedabad, injured five persons, and thereafter entered the house of Mrs. Ilaben Nayankumar Patel where it attacked her 3-1/2 years old child. Smt. Ilaben showed remarkable courage. She not only snatched the child from the jaws of the panther but also managed to bolt the panther inside a room of her house. Thus the area was saved from the wild animal; the panther was later caged and removed by the Zoo authorities. Smt. Patel was presented with a scroll of honour, a gold medal, and a reward of Rs. 2,001.00 by the Ahmedabad Municipal Corporation.

Smt. Ilaben Nayakumar Patel displayed exemplary courage and promptitude in saving the child from the clutches of the panther as well as in the capturing the beast in her house.

2. Shri Swaroop Kumar Das, (*Posthumous*)
C/o. Shri S. K. Das, Head Clerk,
Govt. Degree College, Chirmiri,
District Surguja,
Madhya Pradesh.

On the 19th August, 1983, students of Degree College Chirmiri were camping under the Rashtriya Sewa Yojana on the banks of the river Hasdo in Surguja District, where, while taking bath in the river, one of the students, Shri Chitranjan Biswas, lost his balance and was being swept away. Immediately his classmate, Shri Swaroop Kumar Das jumped into the river to save him. Being unable to withstand the fast flowing current, Shri Das himself began to drown. Some of the students who were near the river bank rushed to the site but they were helpless as none of them could swim. However, a tribal boy jumped into the river and pulled Shri Das out of water. He was rushed to the Central Hospital, Manendragarh, where he was declared dead.

Shri Swaroop Kumar Das displayed exemplary courage and promptitude in making an attempt to save the life of his classmate. In the processs of which he sacrificed his own life.

3. Smt. Madira Hundoo, (*Posthumous*)
C/o. Dr. S. R. Marwah,
Brij Enclave,
Varanasi-221005.
4. Shri Ali Juned Khan,
S/o 20/57 Kennedy Road,
Varanasi Cantt-221002.

On the 3rd November, 1985, a group of students of Class X of St. John's School, Varanasi and their teachers went to Rajdari Water-falls on a picnic. After lunch, around 1.30

P.M. some boys and girls of the group walked over to the water falls and started playing. One of the students, Miss Anuradhika Taneja, slipped into the water and was about to be swept away by the fast current, which was paritculary strong on the day as the sluice gates of the dam were open. On seeing Miss Anuradhika drowning, Smt. Mandira Hundoo a teacher, jumped into the fast flowing waters in order to save the girl although she herself could not swim. Thereafter, she shouted for help whereupon Shri Ali Juned Khan immediately jumped into the water and pulled out Miss Taneja. After rescuing the girl he went back to help Smt. Mandira Hundoo who had been unfortunately by this time carried away by the swift current of the fall into deeper waters and was drowning. Shri Khan failed in his attempt to pull her out, he managed to procure a piece of bamboo and a rope and tried to save Smt. Hundoo. Inspite of being dissuaded by the other members of the picnic team because of the futility and hazards of the exercise. he went ahead with the support of loose rocks in the water bed. Ultimately he managed to reach Smt. Hundoo, who was by then submerged in water and with great effort succeeded in pulling out her body from between the rocks. In the process Shri Khan had to go very close to the edge of the water-fall from where the water fell into a deep gorge, which exposed this young and brave boy to a very grave danger.

Both Smt. Mandira Hundoo and Shri Ali Juned Khan showed conspicuous courage and promptitude in saving the life of Miss Taneja from being swept away in the water falls unmindful of the grave risk involved to their own lives for which Smt. Mandira Hundoo had to pay with her life.

5. Shri Dipak Digambar Deopujari *(Posthumous)*
C/o Smt. Naina Deopujari
(Non-Language Teacher),
Qr. No. 63/3, Type II
Ordnance Factory Bhandara Estate,
Jawaharnagar, Bhandara-441906.

Shri Dipak Digambar Deopujari, ex-chargeman of Ordnance Factory Bhandara, was detailed on 15th June, 1985 to supervise the dewatering of nitrocellulose and nitro-glycerine wet paste", an explosive material, required for the manufacture of services' stores. He allotted specific jobs to three Danger Building Workers for carrying out the dewatering operation under his close supervision and guidance. While the job was in progress, the explosive material suddenly caught fire, almost fully encompassing the process room. Immediately, on noticing the fire, one Danger Building Worker rushed out to safety shouting fire-fire he was followed by Shri Deopujari and another workers, both of whom sustained burn injuries. Shri Deopujari had just begun discarding his burnt clothing, when he remembered not having seen the third Danger Building Workers come out of the process room. Thereupon, Shrdi Deopujari ,disregarding his personal safety re-entered the process bay to save the trapped worker. While doing this, Shri Deopujari received severe burn injuries to the extent of 70% burns. He later succumbled to his injuries on 17th June, 1985; two of the Danger Building Workers also died.

Shri Dipak Digambar Deopujari displayed conspicuous courage and promptitude in trying to rescue the trapped workers inside the burning bay. In the process, he lost his own precious life.

No. 14-Pres/87.—The President is pleased to approve the award of "Uttam Jeevan Raksha Padak" to the persons mentioned as under :—

1. Shri Mahimanand,
Mohalla Chawntra,
District Chamba. (H.P.).

Shri Mahimanand has saved lives of five persons from drowning in the river Ravi on four occasions given below :—

(i) During January, 1981, Shri Mahimanand rescued a shopkeeper from the river Ravi into which the truck in which the latter was travelling had fallen.

(ii) On 27th February, 1982, he with the assistance of two other persons named Bhagat and Ram Hakam Chand saved the life of Smt. Shreshta Kumari, who had slipped into the river.

(iii) On 8th January, 1986 on hearing that somebody had fallen into the river Ravi and was floating down stream, despite great risk to himself he rushed for help and brought that person out of the water.

(iv) On 14th February, 1986, Kumari Harpeet Kaur and Kumari Ravinder Kaur the daughters of the Principal of local I.T.I., had jumped into the river Ravi. On being informed, Shri Mahimanand reacted immediatcly, and rescued Harpeet Kaur. She was admitted to the Civil Hospital, Chamba, but later she died due to severe cold and injuries. Kumari Ravinder Kaur's life however, was saved.

Shri Mahimanand showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of five persons from drowning in the river Ravi on four occasions unmindful of the risk involved to his own life. He displayed a spirit of self sacrifice, and compassion to fellow beings.

2. Shri Ram Charan
village Kotra, P.S. Jakhora,
District Lalitpur, Madhya Pradesh.

On the 13th April, 1982, thirteen labourers including women and children were crossing Betwa river in a fishing boat when suddenly the boat capsized due to a heavy storm. All the persons travelling in the boat fell into the river and were drowning. Shri Ram Charan, who was sitting on the bank of the river, noticed the plight of the persons struggling for their lives. Even though he is physically handicapped, Shri Ram Charan immediately got into a broken boat, which was lying nearby, and reached the drowning persons. One by one he pulled them into the boat, thus saved the lives of eight persons.

Shri Ram Charan, despite being physically handicapped, displayed conspicuous courage and promptitude in saving the lives of eight persons from drowning unmindful of his limitations and the risk involved to his own life.

3. Shri Anand Kumar Raturi *(Posthumous)*
C/o Smt. Gayathri Devi Raturi,
Village Chhatkot, Patti Idvalsyun,
P.O. Khanda, District Pauri Garhwal.

On the 11th December, 1983, an eight year old girl, Kumari Uma fell into a water tank in the palace of the former prince of Narendra Nagar. Shri Anand Kumar Raturi, who happened to be there at that time, immediately entered the water tank in order to save the girl. However, unfortunately as the tank was slippery, he could not steady himself, and was drowned alongwith the girl.

Shri Anand Kumar Raturi showed exemplary courage and promptitude in making a valiant effert to save the girl from drowning and in the process lost his own life.

4. Shri Ajay Indian,
148, Civil Lines,
Bairely,, U.P.

On the 22nd July, 1984, at about 9.00 p.m., Shri Ajay Indian, a singer, had come out of his house after rehearsal for seeing off his musician friends. At a distance of about 10—12 yards from his house a Cobra which was crossing the road, coiled around the leg of a girl and would have bitten her. Shri Indian rushed swiftly and caught hold of the Cobra by its neck. He dragged the reptile in order to release the girl's leg and in this bid he was able to rescue the girl from the grip of the Cobra, but it bit him. Inspite of this he did not leave the snake and managed to put it in a wooden box (which was later taken by the Lucknow Zoo authorities). Shri Ajay then fell unconscious and was immediately taken to the hospital where the Doctors declared him incurable. A snake charmer was called immediately from the village nearby and with the help of his herbal medicines, he managed to save Shri Ajay.

Shri Ajay Indian displayed exceptional courage, promptitude and presence of mind in saving the life of a girl from the clutches of a dangerous Cobra, unmindful of the considerable risk to his own life.

No. 15-Pres/87.—The President is pleased to approve the award of "Jeevan Raksha Padak" to the persons mentioned as under :—

1. Shri Vanza Tulsi Chhagan,
Nagar Palika Fire Station,
Junagadh, Gujarat.

In June, 1983, due to unprecedented rains and resultant floods, Junagadh town had been seriously affected and the residents of Nehru Park Society, Goverdhannagar Society No. 2 North area of S. T. Workshop, Junagadh, Kashi Vishwanath Society and Danapith Society were exposed to very serious danger. Shri Vanza Tulsi Chhagan, an employee of Junagadh Municipality, undertook the task of rescuing the marooned residents of the flood-hit areas, which were under 8 feet of water. Being an excellent swimmer, he managed to save the lives of 18 persons with the help of a rope. On one occasion he lost grip and it appeared that he himself would get drowned. However, undeterred by the adverse circumstances, he carried on with the rescue operations with the sole object of saving fellow human beings.

Shri Vanza Tulsi Chhagan showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of 18 marooned persons totally unmindful of the risk involved to his own life.

2. Shri Dal Mamad Khamisa,
Pipalana, Via-Vanthali,
District Junagadh, Gujarat.

3. Shri Sadhu Rasiklal Ramcharandas,
Tq. Pipalana, Via-Vanthali,
District Junagadh, Gujarat.

In June, 1983, due to unprecedented rains and resultant floods, Junagadh District had been seriously effected, and village Pipalana was one of the worst affected villages. 150 residents of the Harijanvas were marooned and their lives were in peril. Shri Dal Mamad Khamisa and Shri Sadhu Rasiklal Ramcharandas took the initiative and organised rescue operations to save the marooned villagers. They, with a rope tied around their waists, plunged into the flood waters and rescued 150 persons from drowning.

Shri Dal Mamad Khamisa and Shri Sadhu Rasiklal Ramcharandas showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of 150 flood victims, totally unmindful of the risk involved to their own lives.

4. Shri Harjibhai Pithabhai Jadav,
Talati-Cum-Mantri, Padaradi (Ghad),
Tq. Manavadar, District Junagadh,
Gujarat.

During the unprecedented rains and resultant floods, in June, 1983, Junagadh District was seriously affected and Padaradi was one of the worst affected villages. Shri Harjibhai Pithabhai Jadav, the village Patwari, rose to the occasion to render valuable service to the marooned villagers. He plunged into the 5 feet deep, fast flowing flood waters and rescued 30 residents of Harijanvas of Padaradi village. He also promptly informed the Taluka Headquarters about the extent of damage.

Shri Harjibhai Pithabhai Jadav showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of 30 marooned villagers, totally unmindful of risk involved to his own life.

5. Shri Mohinder Pal Sharma,
LLB. III Term Student,
Faculty of Law,
University of Jammu, Jammu.

On the night of 28th/29th October, 1983, Shri Mohinder Pal Sharma was returning from a pilgrimage to Vaishno Devi. On the way back he noticed a girl stumbling and was about to fall down the hillside. He jumped immediately and caught hold of the girl from behind and brought her back to a safer place. In this process he had lost his balance and fell upon the iron railing, a piece of which had pierced his arm.

On 24th March, 1984, Shri Sudarshan Singh, who was riding a scooter, fell into a nullah, after being hit by a jeep near BSF bridge Plaura (Jammu). At that time Shri Mohinder Pal Sharma was driving past in a matador and after seeing a large number of people assembled there and learning about the accident, he immediately went down the nullah and lifted the victim, who was bleeding and unconscious. He brought him on to the road. As it was already dark and there was no medical aid available nearby, Shri Sharma succeeded in getting a lift in a jeep and he took the victim to S. M. G. S. Hospital, Jammu.

Shri Mohinder Pal Sharma showed exemplary courage and promptitude on both the occasions mentioned above in saving the lives of the helpless victims, unmindful of risk involved to his own life.

6. Master Ashok Sheshappa Binnal,
Village Lukkundi, Tq. Dadag,
District Dharwad,
Karnnantaka.

On the 26th April, 1983, Kumari Sharadawwa, who was 10 years old, went to a well in Lakkundi Village, alongwith her mother, to fetch water. Accidentally, the girl fell into the well. Master Ashok Sheshappa Binnal, who was playing nearby, noticed this and he immediately jumped into the well and rescued her.

Master Ashok Sheshappa Binnal thus showed exemplary courage and promptitude in saving the life of the young girl from drowning in the well, unmindful of the risk involved to his own life.

7. Shri Panchakshariswamy,
Home Guard, K. R. Nagar Unit,
Bedarahalli Village, K. R. Nagar,
Taluk, Mysore District,
Karnataka.

On the 18th September, 1985, 36 years old Smt. Radhamma, resident of Bettadapura, was on her way to Bedarahally alongwith Smt. Puttamma (aged 40). While drinking water Smt. Radhamma accidentally fell into the Chamaraja Left Canal near Bedarahally. Smt. Puttamma, who tried to rescue her companion, also fell into the canal and both were struggling for their lives in the 25 feet deep canal. They cried for help and Shri Panchakshariswamy, who happened to pass that way, heard them. He immediately dived into the canal, rescued both the women, and also promptly rendered first-aid to the semi-conscious victims with the help of the villagers.

Shri Panchakshariswamy showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of the drawning women, unmindful of the risk involved to his own life.

8. Master Rajendra Jaiwant Pednekar,
Government Model School for Boys,
Kodibag, Karwar District,
Karnataka.

On the 26th August, 1983, Master Atmaram Vaman Pednekar, a student of II standard of Government Model Primary School for Boys, Kodibag, accidentally fell into an old well in the school compound. The well had no side wall and was submerged due to heavy rains. Master Rajendra Jaiwant Pednekar, a student of VII standard noticed the mishap and immediately jumped into the well and was able to save the boy from drowning.

Master Rajendra Jaiwant Pednekar showed exemplary courage and promptitude in saving the life of the drowning boy, unmindful of the risk involved to his own life.

9. Shri Rangaswamy,
Shantigrama, Dudd Hobli,
Hassan District,
Karnataka.

On the 28th October, 1982, 12 years old Kumari Rathnamma of Shantigrama Village, accidentally fell into a well while drowning water. On seeing this, another girl who was there, cried for help. Several people gathered but none dared to rescue the girl. On seeing the plight of the helpless young girl drowning in the 80 feet deep well, Shri Rangaswamy immediately jumped into the well and saved her life.

Shri Rangaswamy showed exemplary courage and promptitude in saving the life of the drowning girl, unmindful of risk involved to his own life.

10. Shri Sophan,
C/o Shri S. D. Kamble,
Post & At Nasalpur,
Tq. Raibag, District Belgaum,
Karnataka.

On the 12th May, 1983, Smt. Shanakka was going to a well to fetch water. While approaching the well through the steps, she slipped and fell into it. The surface of the water in the well was about 60 feet from the ground level and the depth of water was about another 30 feet. Shri Sophan had noticed the woman struggling for her life. He immediately jumped into the well and saved her from drowning.

Shri Sophan showed exemplary courage and promptitude in saving the life of the drowning woman, unmindful of the risk involved to his own life.

11. Shri Dominic Jacob,
Kalaparamil House,
Kuttumkal-P. O., Sievamala,
Udumbanchola Taluk, Idukki District,
Kerala.

On the 20th December, 1982, a ten year old boy, Master Bijumon, a student of S. D. A. English High School, Nedumkandam, accidentally fell into the school well while drawing water from it. The surface of water in the well was about 10 feet below ground level and the depth of water at the time of incident was about 6 feet. On seeing the accident, Shri Dominic Jacob, a student of 10th standard in the same school, immediately jumped into the well and saved the boy from drowning. The people who witnessed the incident, helped both the boys come out of the well with the help of ropes.

Shri Dominic Jacob showed exemplary courage and promptitude in saving the life of Master Bijumon, unmindful of risk involved to his own life.

12. Shri John Lawrence,
Thottathil Veedu, Neendakara Muri,
Neendakara Village, Karunagapally Taluk,
Quilon District,
Kerala.

In the early hours of 21st August, 1985, about 100 country boats sailed out for fishing in the Arabian Sea at Nendakara as usual. The sea was normal when they had set out fishing. Soon the sea became turbulent and rough suddenly and the fishermen tried to return to the shores. But they were engulfed in the storm. Waves rose from 2½ to 3 meters height rupturing several mechanised fishing canoes. About 20 country boats were wrecked, and about 150 fishermen were struggling for their lives. On seeing their plight, Shri John Lawrence immediately set out to the sea in his boat, braving the high seas. He made several trips into the sea and rescued a number of fishermen who were struggling for their lives. By venturing into the turbulent and hazardous sea in a small boat, Shri John Lawrence exposed himself to grave danger and in the process he sustained physical injuries and his boat was heavily damaged.

Shri John Lawrence showed exemplary courage and promptitude in saving several lives from drowning in the sea, unmindful of risk involved to his own life.

13. Shri Karuthakunju Nanu,
Valiya Changathara Adimuriyil Veedu,
Vallicode-Kottayam,
Pathanamthittan District,
Kerala.

On the 24th March, 1985, 65 years old Shri Karuthakunju Nanu and Smt. Pankajakshi who is about 63 years old, were in their neighbour's coconut grove and plucking of coconuts was in progress. One coconut fell into a well situated in the grove and Smt. Pankajakshi, while looking into the well, standing on a wooden log placed across the well, accidentally slipped and fell into the 45 feet deep well, where the water level was 5 feet deep and the bottom was slushy. She was drowning in the muddy water and was struggling for life. On seeing this, Shri Karuthakunju Nanu, without consideration for his age, immediately climbed down the well, caught hold of her and had to carry her to the surface, which took about 45 minutes. In the meanwhile, other people present, dropped a chair tied to a rope, into the well. He seated her on the chair and the others standing near the well pulled her to safety aloft.

Shri Karuthakunju Nanu showed exemplary courage and promptitude in saving the life of the old woman, unmindful of risk involved to his own life.

14. Kumari Khadeeja,
D/o Shri Aliyar,
Arackal, Pallarimangalam,
Pothanicad Village,
Ernakulam District,
Kerala.

On the 15th September, 1984, Master Muhammad, a 4½ year old child, accidentally fell into a well 28 feet below ground level with 5 feet of water, in the courtyard of his house. His 12 years old sister Kumari Khadeeja, who was in the neighbour's house, saw this. She immediately rushed to the well shouting for help and jumped into the well to save her drowning brother. On hearing her shouts, the neighbours collected there and saw the girl holding the child drowning in the well. Shri Abdul Rahiman, the paternal uncle of Kumari Khadeeja, rushed to the well and threw the rope used for drawing water, into the well. She caught hold of the rope and leaned on to the wall of the well. In the meantime, a bamboo ladder was lowered into the well with the help of which Kumari Khadeeja climbed up with her brother.

Kumari Khadeeja showed exemplary courage and promptitude in saving her brother from drowning in the well, unmindful of the risk involved to her own life.

15. Shri Ramachandra Iyer Chandrasekhar,
Vaipu Madam, Valonchuzhy,
Mallassory-P. O.,
Pathanamthitta District,
Kerala.

On the 28th June, 1985, two middle-aged persons, Shri S. Mohanan and Shri K. Mohannan were crossing the flooded Achankoil River by holding on to some pieces of firewood, tied together in the shape of a raft. Because of the fast flowing current, the raft broke. The two were being swept away and were struggling for their lives in 30 feet of water. Hearing them yelling for help, a number of people gathered on the bank of the river. 17-year-old Shri Chandrasekhar immediately jumped into the river, swam towards them and brought them safely to the shore.

Shri Ramachandra Iyer Chandrasekhar showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of two persons, unmindful of the risk involved to his own life.

16. Master Srambikkal Krishnankutty Ranadeep,
P. O. Thamarayur, Via-Chavakkad,
Trichur District,
Kerala.

On the 19th September, 1985, Master Ranadeep (aged 14 years) and Master S. Satheesan (aged 9 years), students of Sreekrishna High School, Guruvayur, went to a pond near the school, alongwith other boys to wash their hands and tiffin boxes. While doing so, Master Satheesan, who did not know swimming, fell into the pond. It was during the rainy season and the depth of water in the pond was about 30 feet. On seeing the boy struggling for life in the pond, Master Ranadeep immediately jumped into it, seized him by his shirt collar and drew him to safety.

Master Srambikkal Krishnankutty Ranadeep thus showed exemplary courage and promptitude in saving the drowning boy, unmindful of risk involved to his own life.

17. Kumari Ganga Bai,
D/o Shri Gajablal Sajjan,
Godarpura (P. O. Onkareshwar).

On the 24th June, 1985, at about 4.00 P.M., 13 year old Kumari Ganga Bai, daughter of Gajablal Sajjan, a washerman, was washing clothes on the banks of the Narmada River. Another family consisting of mother, son and two daughters were also taking bath there. Suddenly, the boy who was 10 years old; slipped into deeper waters and was about to drown. His two sisters tried to save him but they were also caught in the current and were on the verge of drowning. Seeing the three children drowning, their mother fell unconscious due to shock. On seeing this, Ganga

Bai immediately jumped into the river without caring for her own life and was able to save all the three children from drowning.

At a very young age, Kumari Ganga Bai displayed exemplary courage and quick reflexes in saving the lives of the three children, unmindful of considerable risk to her own life.

18. Shri Hem Raj Pawar,
Home Guard No. 50-A,
C/o District Commandant,
Home Guards, Betul (M. P.)

On the 22nd June, 1985, Kumari Shabana, who had appeared for her LL.B. Examination at the Government College, Betul, suddenly jumped into a well within the campus with the intention of committing suicide. This act was noticed by some students present nearby and they shouted for help. On hearing them, Shri Hem Raj Pawar, who was on duty alongwith the Company Quarter Master Havildar Rewaram in the college campus to ensure discipline during the examinations, rushed to the site and immediately jumped into the well which was about 40 feet below ground level, and the water depth was 15 feet. He caught hold of the girl by her hair and managed to keep the drowning girl and himself above the water surface by taking support of the wall of the well.

In the meantime, a rope was thrown into the well and the girl was pulled out by the people who had gathered around the well. She was administered first aid by two Home Guards.

Shri Hem Raj Pawar showed exemplary courage and promptitude in saving the life of the girl, unmindful of the risk involved to his own life.

19. Shri Vikram Singh Yadav,
S/o Shri Ghesulal Yadav, Peon,
Dist. Central Co-operative Bank,
Sehore (M. P.)

On the 12th May, 1985, at about 11.00 A.M., three youth, namely Shri Shailendra Pratap Singh, Shri Rajendra Pratap Singh and Shri Jay Prakash Singh, went to bathe in seevan River, near Chandveer bridge. The depth of water at this place was about 30–32 feet. While bathing, suddenly Shri Shailendra Pratap Singh started drowning. The other two boys jumped into the river to save him. All the three boys did not know swimming. Shri Vikram Singh, who was reading some thing near the school campus, ran to the accident spot on hearing their shouts for help. Scores of people had gathered on the bridge but nobody had the courage to plunge into the river and save the drowning boys. Without caring for his own life, Shri Vikram Singh jumped into the river in order to save them and he brought the three youngmen out of the river, one by one. Shri Shailendra Singh was taken to the District Hospital as his condition was very serious. He, however, died after two hours.

Shri Vikram Singh Yadav displayed exemplary courage and promptitude in saving the lives of two young men, unmindful of considerable risk to his own life.

20. Shri Dattatraya Gopal Kadam,
At & Post Karul, Taluka Vaibhavwadi,
Distt. Sindhudurg,
Maharashtra.

On the 22nd July, 1984, one truck No. MHL-7166 collided with the parapet on the roadside and fell into a deep valley about 200—300 feet deep. Shri Kadam, who was passing by, witnessed the accident and immediately rushed to the fallen truck. He found that three persons were trapped inside the truck. There was no footpath etc. to reach the truck;, he somehow managed to reach it by going down cross-country. He carried the three victims one by one and brought them to safety. He gave them some first-aid and managed to send them to a dispensary at Kolhapur by bus.

Shri Dattatraya Gopal Kadam showed exemplary courage in saving the lives of three persons trapped inside the truck which had fallen into a deep valley, unmindful of the risk involved to his own life.

21. Shri Dynaneshwar Namdeorao Shende,
Village Bhosa P. S. Yevatmal City,
Taluka & District Yevatmal,
Maharashtra.

On the 28th January, 1986, a 2½ year old boy, Naresh Vithoba Rajne, while playing in the compound, accidentally fell into a well, which was about 100 feet away from his house. The well is 40 feet deep and 12 feet wide and the water level was 3 to 4 feet. His mother, who was watching him, on seeing the accident ran towards the well shouting for help. Her frantic shouts drew the attention of Shri Dynaneshwar Namdeorao Shende, who was studying at his friend's house, about 150 feet away. He immediately rushed towards the well and climbed down into it with the help of a rope which was used for drawing water. He took the child (who was unconscious) out of the water and put him in a bucket, lowered by the people gathered there. The child was pulled out of the well and rushed to the General Hospital.

Shri Dynaneshwar Namdeorao Shende showed exemplary courage and presence of mind in saving the life of the child, totally unmindful of the risk involved to his own life.

22. Shri Kiran Anant Vartak,
At & Post Agashi, Taluka Vasai,
Distt. Thane, Maharashtra.

23. Shri Vinod Narayan Vartak,
At & Post Agashi, Taluka Vasai,
Distt. Thane, Maharashtra.

On the 8th August, 1985, Kumari Rajani Gopal Vartak went to a well to wash her clothes and accidentally fell into it. The incident was noticed by two school-going children who were passing by and they shouted for help. Shri Vinod Narayan Vartak and Shri Kiran Anant Vartak, who were at a distance of about 100 feet, heard the shouts and ran towards the well. They immediately jumped into the well and rscued the girl out of it.

Shri Kiran Anant Vartak and Shri Vinod Narayan Vartak showed exemplary courage and promptitude in saving the girl from drowning, unmindful of the risk involved to their own lives.

24. Shri Shaikh Khansaheb Usmania,
St. Saviour's High School,
Ahmednagar.

On the 1st September, 1985, a 17 year old girl, Kumari Sayed Safia Nadir, accidentally fell into a well while drawing water from it. People who were nearby, saw this and gathered round the well. One of them, Shri Shaikh Khansaheb Usmania, showing presence of mind immediately took a rope and tied it to the wooden frame of the pulley. With the help of the rop, he went down into the well where the water level was 12 to 15 feet. When he could not see the girl on the surface, he dived into the water, caught hold of her and brought her to the surface. He then tied a rope around her waist and asked the people who had gathered there, to pull her out of the well. In the process both of his palms got injured.

Shri Shaikh Khansaheb Usmania showed exemplary courage, took timely action, and displayed presence of mind in saving the life of the girl, unmindful of the risk involved to his own life.

25. Shri Subhash Tukaram Mhatre,
At & Post Kon Village,
Taluka Bhivandi, District Thane,
Maharashtra.

On the 16th June, 1981, a woman threw her child into the Thane Creek and jumped into it herself with the intention of committing suicide. Shri Subhash Tukaram Mhatre, who was passing over the bridge on his bicycle, saw this. He stopped and immediately jumped into the Creek. He caught hold of the child first and handed him to a fisherman who was fishing on a floating tube. Then he swam towards the drowning woman, caught hold of her and held on to a pole in the Creek, with the lady, till a fisherman approached them in his boat. Shri Mhatre put the woman and her child in the boat and brought them ashore.

Shri Subhash Tukaram Mhatre displayed exemplary courage and acted promptly in saving the two lives, unmindful of the risk involved to his own life.

26. Shri Bijoy Kumar Patnaik,
Village Badapla, P.O. Pankapal,
P.S. Tirtol, District Cuttack.

On the 1st May, 1983, a boat carrying some passengers capsized in the river Mahanadi. On hearing the cries for help by the drowning passengers, Shri Bijoy Kumar Patnaik, who was on the river bank, immediately plunged into the river and swam towards the hapless victims. He managed to save seven persons from drowning; four persons, however, were drowned in this tragedy.

Shri Bijoy Kumar Patnaik showed exemplary courage and promptitude in saving the lives of seven persons, unmindful of the risk involved to his own life.

27. Shri Kundan Kumar Mahavar,
C/o Shri Chandalal Mahavar,
Koliyon Ka Bas, Tambaku Pada, Lalsot,
District Jaipur.

On the 12th August, 1985, Master Ghanshyam Khandelwal went to 'Meda' lake on a picnic alongwith members of his family. While going around the lake, he slipped and fell into it. On seeing this, Shri Kundan Kumar Mahavar immediately jumped into the lake and pulled the drowning boy out of the water.

Shri Kundan Kumar Mahavar showed exemplary courage and promptitde in saving the boy from drowning, unmindful of the risk involved to his own life.

28. Shri Gunjan Mishra,
H. No. 81, Chouthiana, Mainpuri,
Uttar Pradesh.

On the 8th March, 1985, Master Gunjan Mishra, alongwith some other boys, was flying a kite in a deserted house in Choutiana Mohalla. A 2-1/2 year old child Chetan Chaturvedi, who was playing near a water tank containing 4 feet deep water, accidentally fell into it. Master Gaurav, Gunjan Mishra's brother, noticed this and shouted for help. Master Gunjan Mishra immediately jumped into the water tank and brought the child to safety. He sustained an injury in the process.

Master Gunjan Mishra thus showed exemplary courage and promptitude in saving the life of child, unmindful of the risk involved to his own life.

29. Kumari Himani Uniyal,
41/1, Sunderwala Camp,
Raipur, Dehradun.

On the 12th March, 1983, Kumari Himani Uniyal and Master Kishore (3 years) were playing near a water tank, which was 3-1/2 feet deep. While playing Master Kishore was about to fall into the tank, Kumari Uniyal caught hold of his legs and shouted for help. On hearing her shouts, people rushed to the water tank and saved the child from falling into the tank. If the child had struggled, probably Kumari Uniyal also would have fallen inside the tank and both may have drowned.

Kumari Himani Uniyal showed exemplary courage and promptitude in saving the child from falling into the water tank, unmindful of the risk involved to her own life.

S. NILOKANTAN, Dy. Secy.
to the President

MINISTRY OF FINANCE
(DEPARTMENT OF ECONOMIC AFFAIRS)

New Delhi, the 19th January 1987

RESOLUTION

No. F. 6(1)-PD/86.—Reference this Ministry's Resolution No. F. 6(1)-PD/86 dated 30th April, 1986, as amended by the Resolution of even number dated 14th August, 1986, regarding the rate of interest of General Provident Fund and similar other funds for the financial year 1986-87.

2. It is further announced for general information that subscribers to these funds retiring or quitting service during 1986-87 shall have the option to be continued to be governed during the period of their service in 1986-87 by the interest rate and incentive bonus applications for the year 1985-86 specified in this Ministry's Resolution No. F. 6(2)-PD/85 dated 22nd May 1985.

3. Persons who have already had their Provident Fund claims settled may also be allowed to exercise the above option.

4. ORDERED that this Resolution be published in the Gazette of India.

V. BALASUBRAMANIAN, Addl. Budget Officer

MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS
DEPARTMENT OF ENVIRONMENT, FORESTS AND WILDLIFE

New Delhi, the 8th January 1987

RESOLUTION

SUBJECT :—*Establishment of Regional Advisory Groups for monitoring forest conservation and management (Regional Advisory Groups in Forest Conservation).*

No. 37-3/85-F.P.—The Government had requested the Advisory Groups vide para-8 of Resolution of even number dated 5th May, 1986 to submit their reports on various matters covered by the terms of reference of the Resoluion before 31st October, 1986. Keeping in view the fact that these Regional Groups will have to make field visits to concerned States to familiarise with the problems, it will not be possible for the Groups to submit their reports by the stipulated date. It has now, therefore, been decided by he Government of India that these Regional Advisory Groups may submit their reports by 31st March, 1987.

ORDER

ORDERED that a copy of his Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information

M. K. RANJITSINGH, Jt. Secy.

PRINTED BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD,
AND PUBLISHED BY THE CONTROLLER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1987